



SEE MORE JESUS · WANTTOSEEMORE.COM

सद्-असद्-विषये बाइबिल-ग्रन्थः किं वदति? — जीवने आचरणम् · स्ट्रॉङ्ग-संख्यायुक्तानि KJV-पवित्रशास्त्रवचनानि

जीवने आचरणम् · ईश्वरेण सह गमनम् — सर्पणम्, गमनम्, धावनम्, समापनम्

सद्-असद् — मौलिकं बाइबिलीयं सिद्धान्तम्

प्रारम्भिकवचनम्

शुभम् अशुभं च केवलं ज्ञातव्यं वस्तु न भवति । तत् तु गन्तव्यः पन्थाः अस्ति । बालकः एकस्मिन् दिवसे गन्तुं न शिक्षते: प्रथमं सः हस्ताभ्यां जानुभ्यां च सर्पति; ततः तस्य पिता तं बाहुभ्यां गृहीत्वा गन्तुं शिक्षयति; ततः सः एकाकी गच्छति; ततः सः वर्धते, धावति च । यः सम्यक् धावति सः स्पर्धायां धावति, स्पर्धायाः च अन्तः भवति, अन्ते च पतनं वा समापनं वा भवति । प्राचीनायां भाषायां द्वे लघुशब्दे सर्वे विषयं वहतः: towb (H2896, शुभम्) च ra (H7451, अशुभम्) । नवीनायां भाषायां चत्वारः शब्दाः सन्ति: agathos (G18, शुभम्) च kalos (G2570, शुभम्); kakos (G2556, अशुभम्) च poneros (G4190, अशुभम् — यस्मिन् इच्छा अन्तर्निहिता वर्तते) । अयम् अध्ययनं शुभम् अशुभं च मनुष्यस्य सम्पूर्णं गतिं यावत् नयति: कथं इन्द्रियाणि प्रथमं तयोः भेदं ज्ञातुं शिक्षन्ते; कथं मनुष्यः प्रतिदिनं शुभे गमनं करोति; कथं सा गतिः स्पर्धा भवति, युद्धं च, यत् एकेन सत्येन दुष्टेन सह क्रियते; तथा कथं सा गतिः समाप्यते — न श्मशाने, अपि तु जीवनवृक्षे, उद्घाटिते तिष्ठति, यत्र पुनः शापः न भवति । तत् अन्वेषय ।

त्रयः प्रश्नाः यान् इदम् अध्ययनम् उत्तरति:

1. मनुष्यः सदसद्विवेकं प्रथमं कथं ज्ञातुं शक्नोति, तत् विवेचनं च कुत्र आरभ्यते?
2. यदा विवेकः ज्ञातो भवति, तदा मनुष्येण तेन किं कर्तव्यम् — प्रतिदिनं जीवने तत् कथम् आचरणीयम्?
3. गमनं कथं धावनरूपं दुष्टतायाः विरुद्धं युद्धरूपं च भवति, तच्च कथं समाप्यते?

ग्रीकभाषायाः प्रमुखशब्दाः

- “सत्” — **G18 agathos** — स्वभावेन कार्येण च शुभं, उपकारकम्
एकं विना कश्चिदपि साधुः नास्ति, स च ईश्वरः एव, अपि च मनुष्यः यत् साधुत्वं दर्शयति तत् पूर्वं दत्तात् उत्तमनिधेः आगच्छति ।
- “सत्” — **G2570 kalos** — दर्शितः, दर्शनार्हः
यानि सत्कर्माणि इतरे जनाः पश्यन्ति, तदर्थं च पितरं महिमानयन्ति
- “दुष्ट” — **G2556 kakos** — दुष्ट, अशुभ, निरर्थक, हानिकर
दुष्टत्वस्य सामान्यशब्दः — प्रतिकर्तव्यं नास्ति, किन्तु शुभेन पराभवनीयम् ।
- “दुष्ट” — **G4190 poneros** — दुष्टम्, खलम्, अहितकरम् — तत्र सङ्कल्पयुक्तं दुष्टत्वम्

दुष्टः, दुष्टा दृष्टेः, दुष्टं धनम्

“अभिभू” — G3528 nikao — जेतुं, विजयं प्राप्तुम्
सम्पूर्णा यात्रा अत्र समाप्यते — शुभेन दुष्टं जयतु; यो जयति तस्मै जीवनवृक्षः प्रदीयते।

“वृक्षः” — G3586 xylon — काष्ठम्, वृक्षः, दण्डः
यत्र वृक्षे सः अस्माकं पापानि उढवान्, तस्य वृक्षस्य जीवनवृक्षस्य च शब्दः एकः एव अस्ति।

“परीक्षते” — G1381 dokimazo — परीक्षितुं, परीक्षां कर्तुं, यथा अग्निना धातुः परीक्ष्यते
अभ्यस्तम् इन्द्रियं किमपि दृढं धारयितुं पूर्वं सर्वाणि परीक्षते।

हिब्रूभाषायाः मुख्यशब्दाः

“सत्” — H2896 towb — शोभनम्, मनोहरम्, अनुकूलम्, सम्यक्
ईश्वरेण निर्मितस्य सर्वस्य विषये तस्य स्वकीयः निर्णयः, दुष्टत्वस्य नाम कदापि न आसीत् तस्मात् पूर्वमेव उक्तः।

“दुष्ट” — H7451 ra — पापम्, दुष्टम्, विपत्तिः, दुष्टता
निषिद्धवृक्षे प्रथमं नामितः शब्दः — यस्मात् दुष्टात् अपसर्तव्यम्

“जानाति” — H3045 yada — ज्ञातुम्, अवगन्तुम्, विवेक्तुम्
शुभाशुभयोः ज्ञानं शुभस्य वरणेन समानं न भवति।

“वृणु (चयनं कुरु)” — H977 bachar — ॐ चयनं कर्तुम्, वरणं कर्तुम्
जीवनं शुभं च तव पुरतः स्थापितम् — अतः जीवनं वृणु

“प्रत्याख्यानम्” — H3988 ma'as — अस्वीकर्तुं, त्याज्यं कर्तुं, तिरस्कर्तुं
यः बालकः दुष्टं त्यक्तुं शुभं च वरीतुं जानाति

“निवृत्तिः” — H5493 sur — विचलितुम्, अपगन्तुम्
प्रभोः भयं प्रवर्तितम् — दुष्टात् अपसर, शुभं च कुरु

“श्रुणु” — H8085 shama — श्रोतुम्, आकर्णयितुम्, आज्ञापालनं कर्तुम्
यः श्रुणोति सः निर्भयं निवर्त्यति, अनिष्टभयात् च शान्तः भविष्यति

“कल्पयति” — H2803 chashab — विचारयितुम्, कल्पयितुम्, योजनां कर्तुम्
यूसुफस्य वृत्तान्तस्य उभयोः पक्षयोः स एव शब्दः — यत् अनिष्टार्थं कल्पितम् आसीत्, तत् ईश्वरेण हितार्थं कल्पितम्।

“भयम्” — H3372 yare — भीतिः, भयम्; आदरः, पूज्यभावः
यत् परमेश्वरस्य भयं दुष्टात् दूरं गच्छति, न तत् भयं यत् परमेश्वरात् निलीयते।

I. सर्पणम् — तत् कथं प्राप्तव्यम्

मम व्यक्तिगताः विचाराः — प्रत्येकं गमनं नीचैः आरभते, इदं च गमनं ग्रन्थस्य सर्वप्रथमे एव स्थाने आरभते। दुष्टत्वस्य नामकरणात् पूर्वमेव शुभं कथितं भवति — एकस्मिन् एव अध्याये सप्तकृत्वः। विवेकः दुष्टस्य आस्वादानेन नारभते; सः ईश्वरेण पूर्वमेव दर्शितस्य शुभस्य आस्वादानेन आरभते। नीचैः आरभस्व, अल्पेन आरभस्व, आरभस्व च।

A. Genesis 1:4 ↗ read this in your Bible

ईश्वरः प्रकाशं अपश्यत्, यत् तत् उत्तमम् आसीत् → ईश्वरः प्रकाशं अन्धकारात् पृथक् अकरोत्।

B. Genesis 1:31 ↗ read this in your Bible

ईश्वरः स्वेन कृतं सर्वं वस्तु अपश्यत् → पश्य, तत् अतीव उत्तमम् आसीत्।

(मम स्वकीयाः विचाराः — अत्रैव शुभस्य अन्वेषणस्य आरम्भः भवति, न पालनीयेन नियमेन, अपि तु सः यत् निर्मितवान् तद्विषये पुरुषस्य स्वकीयेन निर्णयेन। यत् पुरुषः कदापि शुभं चयनं कर्तुम् आदिष्टः, ततः पूर्वमेव ईश्वरः तत् नामितवान्, तच्च सम्यक् नामितवान्।)

C. Psalm 34:8 ↗ read this in your Bible

आस्वादयत पश्यत च यत् परमेश्वरः साधुः अस्ति -- धन्यः सः नरः यः तस्मिन् विश्वसिति।

D. Psalm 119:68 ↗ read this in your Bible

त्वं शुभः असि + शुभं करोषि → मां तव विधीन् शिक्षय।

(मम स्वकीयाः विचाराः — शुभम् इति केवलम् ईश्वरेण उक्तं वचनं न भवति; तत् तस्य स्वरूपम् अस्ति, तस्य च कर्म अस्ति। प्रभुः शुभः इति आस्वादनं, शुभम् वा अशुभम् वा इति उक्तस्य अन्यस्य सर्वस्य विषयस्य निर्णयस्य नूतनस्य मार्गस्य आरम्भः भवति।)

E. Genesis 3:22 ↗ read this in your Bible

মনুষ্য: শুভাশুভয়ো: জ্ঞানায় অস্মাকম্ এক: ইব অভবত্ → মা কদাচেত্ স: জীবনবৃক্ষস্যাং ফলং গৃহীয়াত্।

(মম ব্যক্তিগতা: বিচারা: — ইদং কারণং যত্ এতত্ বিবেচনম্ অধুনা কেবলং প্রাপ্তব্যং ন ভূত্বা অধ্যতব্যমেব ভবতি। মনুষ্য: স্বয়মেব, ইশ্বরাত্ পৃথক্ সন্, সদসদজ্ঞানং প্রাপ্তুং প্রযতিতবান্, তেন চ প্রাপ্তং জ্ঞানং তস্য বহনশক্তে: অধিকম্ আসীত্। তস্মাত্ দিবসাত্ আরম্ভ, সদসদ্বিবেক: সম্যকপ্রকারেণ পুন: অন্বেষ্টব্য:, ন তু স্বত: গৃহীতব্য:।)

F. Deuteronomy 30:19 ↗ *read this in your Bible*

জীবনং মৃত্যুশ্চ তব পুরত: স্থাপিতম্ → তস্মাত্ জীবনং বৃণু।

G. 1 Kings 3:9 ↗ *read this in your Bible*

বোধযুক্তং হৃদয়ম্ → শুভাশুভয়ো: বিবেচনায়।

(মম স্বকীয়া: বিচারা: — শলোমোন ইদং বিবেচনং স্বয়মেব প্রাপ্তবানিতি ন প্রত্যজানাৎ; স: ইশ্বরাত্ তত্ অযাচত। শুভস্য অশুভস্য চ ভেদস্য অন্বেষণং সর্বেষাং কৃতে তেনৈব প্রকারেণ আরম্ভতে: স্বকীয়স্য নির্ণয়স্য বিশ্বাসেন ন, অপিতু প্রার্থনয়া সহ।)

H. Isaiah 7:15 ↗ *read this in your Bible*

দুঃ ল্যক্তু শুভং চ বরীতুং জ্ঞাতব্যম্।

I. Hebrews 5:12 যতো ঘূষং যদ্যপি সময়স্য দীর্ঘত্বাৎ শিক্ষকা ভরিতুম্ অশক্ষ্যত তথাপীশ্বরস্য বাক্যানাং যা প্রথমা বর্ণমালা তামধি শিক্ষাপ্রাপ্তি যুগ্মাকং পুনরাবৃত্ত্যাকো ভরতি, তথা কঠিনদ্রব্যে নহি কিন্তু দুগ্ধে যুগ্মাকং প্রয়োজনম্ আস্তে (13) যো দুগ্ধপায়ী স শিশুঃ সো বৈতিকাৰণাৎ ধৰ্ম্মব্রাহ্মণ্যে তৎপৰো নাস্তি

যুগ্মভ্যং দুগ্ধস্য আবশ্যকতা বর্ততে, ন কঠিনাহারস্য → য: কোঽপি দুগ্ধং সেবতে স: ধর্মস্য বচনে অকুশল:, যত: স: শিশু: বর্ততে।

(মম ব্যক্তিগতা: বিচারা: — এতত্ জীবত: প্রত্যেকজনস্য আরম্ভস্থানম্ অস্তি : ক্ষীরপায়ী শিশু:, শুভাশুভয়ো: বিবেচনে অকুশল:, তত্র চ কা অপি লজ্জা নাস্তি। লজ্জা কেবলং তত্রৈব স্থাতুং ভবতি। বিবেক: লভ্যতে, পরন্তু স: সচ্চ: এব ন লভ্যতে।)

J. Proverbs 2:3 ↗ *read this in your Bible*

জ্ঞানায় ক্রন্দসি + নিহিতনিধীনামিব তাং মৃগয়সে → ইশ্বরস্য জ্ঞানং বিন্দসি।

II. গমনম্ — তত্ প্রাপ্তবন্ত: সন্ত: তেন কিং কৰ্তব্যম্

(মম স্বকীয়া: বিচারা: — বালক: ইদানীং স্বপাদয়ো: তিষ্ঠতি, গমনং চ প্রতিদিনং তস্য বিকল্যস্য অধ্যাসং করোতি, ন তু সক্রদেব। পুরাতনং নিয়মং এতত্ দুঃস্য ত্যাগং সতশ্চ বরণং ইতি বদতি, পুন: পুন:, সামান্যদিবসস্য লঘুনির্ণয়ে। পশ্যত যত্ কতিবারং তয়ো: শব্দয়ো: যুগ্মং পুনরাবর্ততে: দুঃত্ অপসর, সত্ চ কুরু।)

A. Psalm 34:14 ↗ *read this in your Bible*

দুঃত্বাত্ বিরম + সত্কর্ম কুরু → শান্তিঁ অন্বিচ্ছ, তাং চ অনুসর।

B. Amos 5:14 ↗ *read this in your Bible*

শুভং মার্গয়ত, ন অশুভম্ → অশুভং দ্বিষত, শুভং চ প্রীণয়ত।

C. Proverbs 3:7 ↗ *read this in your Bible*

স্বনেত্রয়ো: স্বয়ং জ্ঞানী মা ভব → পরমেশ্বরাৎ বিবীহি + দুঃত্ অপসর।

D. Proverbs 8:13 ↗ *read this in your Bible*

পরমেশ্বরস্য ভয়ং = দুঃত্বস্য দ্বেষ:

(মম স্বকীয়া: বিচারা: — সত্বর্মনি গমনং ন এক: নিশ্চয়: ভবতি; তত্ তু প্রভো: ভয়ম্ অস্তি যত্ দিনে দিনে সামান্যস্থানেষু তান্যেব বস্তূনি দ্বেষ্টুং স্থাপয়তি — অহঙ্কারং, গর্বিতং মার্গং, গর্বিতং মুখম্। গমনবিষয়ে কিমপি নাটকীয়ং নাস্তি। সা তু রক্ষিতা দিশা এব অস্তি।)

E. Job 28:28 ↗ *read this in your Bible*

পরমেশ্বরস্য ভয়ম্ = প্রজ্ঞা + দুঃত্বাত্ নিবৃতি: = বুদ্ধি:।

F. Isaiah 1:16 ↗ *read this in your Bible*

যুগ্মান্ প্রক্ষালয়ত, যুগ্মান্ শুদ্ধান্ কুরুত → দুঃকর্ম কর্তু ত্যজত + সত্কর্ম কর্তু শিক্ষধ্বম্।

(মম স্বকীয়া: বিচারা: — ক্রমং লক্ষয়ত: প্রথমং প্রক্ষালনম্, তত: নিবৃতি: তত: শিক্ষণম্। গমনং কেবলং দুঃকর্মনিবর্তনং নাস্তি; অপি তু নূতনশুভাচারসমূহস্য শিক্ষণম্ অস্তি — পীড়িতানাং কৃতে ন্যায়:, অনাথানাং বিধবানাং চ কৃতে চিন্তা। গমনস্য হস্তৌ পাদৌ চ স্ত:, কেবলং শুদ্ধান্ত:করণং ন।)

G. Proverbs 17:13 ↗ *read this in your Bible*

য: কশ্চিত্ শুভস্য প্রতিফলরূপেণ পাপং প্রযচ্ছতি → তস্য গৃহাত্ পাপং ন প্রস্থাস্যতি।

H. 1 Thessalonians 5:21 সৰ্ব্বাণি পৰীক্ষ্য যদ্ ভদ্রং তদেব ধাৰয়ত [G4190 poneros ■] [G1491 eidos ■]

[G567 apecho ■] [G2570 kalos ■] [G2722 katecho ■] [G1381 dokimazo ■] (22) যৎ কিমপি পাপৰূপং ভৱতি তস্মাদ্

দূৰং তিষ্ঠত

সৰ্বাণি পৰীক্ষধ্বম্ → যত্ উত্তমং তত্ বৃহৎ ধাৰয়ত + সৰ্বস্মাত্ দুঃত্বাত্ দূৰে তিষ্ঠত।

(মম স্বকীয়া: বিচারা: — "প্রমাণীকরণম্" ইতি শব্দ: dokimazo (G1381, প্রমাণীকরণায়) আস্তে, যথা আগ্নেয়া ধাতু: পরীক্ষ্যতে তথা কৌশ্লেত্ পরীক্ষিতুম্। সত্কর্মণি চলনং প্রতিদিনং পরীক্ষণম্ অস্ति, ন তু এক: নির্ণয়:। তৎ পরীক্ষস্ব, তদা তৎ ধারয়, তদা যৎ কেবলং দুঃখম্ ইব দৃশ্যতে তস্মাদপি দূরে তিষ্ঠ।)

I. Matthew 5:16 যেন মানরা যুস্মাকং সৎকর্ম্মাণি রিলোক্য যুস্মাকং স্বর্গস্থং পিতরং ধন্যং বদন্তি, তেষাং সমক্ষং যুস্মাকং দীপ্তিস্তাদৃক্ প্রকাশাতাম্ [G2041 ergon ■] [G2570 kalos ■]

তব জ্যোতি: তথা প্রকাশাতাম্ → তে তব সত্কর্ম্মাণি পশ্যন্তু + তব পিতরং মহিমান্বিতং কুর্বন্তু।

J. Galatians 6:9 সৎকর্ম্মকরণেহস্মাভিৰশ্রান্তৌ ভরিতর্যং যতোহক্লাস্তৌস্তিষ্ঠন্তিৰস্মাভিৰুপযুক্তসময়ে তৎ ফলানি লক্ষ্যন্তে [G18 agathos ■] [G2570 kalos ■] (10) অতো যারং সমযস্তিষ্ঠতি তারং সর্বান্ প্রতি বিশেষতো বিশ্বাসরেস্মরাসিনঃ প্রত্যস্মাভি হিতাচারঃ কর্তব্যঃ

সত্কর্ম্মণি ক্লান্তা ন ভবাম → যথাবকাশং সর্বান্ মানবান্ প্রতি সত্কর্ম্ম কুৰ্যাম।

K. Romans 2:7 রস্তন্তু যে জনা ধৈর্য্যং ধূরা সৎকর্ম্ম কুর্বন্তো মহিমা সৎকারোহমবৎরনৈঃতানি মুগযন্তে তেভ্যোহনন্তায়ু দাস্যতি [G18 agathos ■] [G2556 kakos ■] [G18 agathos ■] (8) অপবং যে জনাঃ সত্যধর্ম্মম্ অগৃহীৎরা রিপবীতধর্ম্মম্ গৃহ্ণন্তি তাদৃশা রিৰোধিজনাঃ কোপং ক্রোধঞ্চ ভোক্ষ্যন্তে (9) আ যিহুদিনোহন্যদেশিনঃ পর্যন্তং যারন্তঃ কুকর্ম্মকাৰিণঃ প্রাণিনঃ সন্তি তে সর্বের দুঃখং যাতনাঞ্চ গমিষ্যন্তি; (10) কিন্তু আ যিহুদিনো ভিন্নদেশিপর্যন্তা যারন্তঃ সৎকর্ম্মকাৰিণো লোকাঃ সন্তি তান্ প্রতি মহিমা সৎকাৰঃ শান্তিচ ভরিষ্যন্তি

সত্কর্ম্মণি ধৈর্য্যযুক্তং অবিক্তিত্বম্ → মহিমা, সম্মান:, শান্তিঃ, প্রত্যেকং সত্কর্ম্মকাৰিণং পুরুষং প্রতি।

L. Matthew 19:17 ততঃ স উরাচ, মাং পবমং কুতো বদসি? বিনেশচরং ন কোপি পবমঃ, কিন্তু যদ্যনন্তায়ুঃ প্রাপ্তং রাজ্জসি, তর্হ্যজ্ঞাঃ পালয় [G18 agathos ■]

এক: পরমেশ্বর: বিহায় কোঃপি সাধু: নাস্ति।

(মম স্বকীয়া: বিচারা: — সত্মার্গে গমনং কদাপি এতাৎশং চিন্তনং ন ভবতি যৎ মনুষ্য: তস্য উত্পত্তিস্থানম্ অবতৎ ইতি। একং বিনা কোঃপি সজ্জন: নাস্ति, স্বয়ম্ ইশ্বর: এব স:। যস্মিন্ মাৰ্গে মনুষ্য: গচ্ছতি, তৎ অন্যে ন পুরুষেণ প্রথমং দত্তম্ আসীৎ।)

M. Luke 6:45 তদ্বৎ সাধুলোকোহন্তঃকরণরূপাৎ সুভাণ্ডাগারাদ্ উত্তমানি দ্রব্যানি বহিঃ কৰোতি, দুষ্টৌ লোকশ্চান্তঃকরণরূপাৎ কুভাণ্ডাগাৰাৎ কুৎসিতানি দ্রব্যানি নির্গময়তি যতোহন্তঃকরণানাং পূর্ণভারানুরূপাণি রচাংসি মুখান্নিগচ্ছন্তি [G4190 poneros ■] [G2344 thesauros ■] [G18 agathos ■]

তস্য হৃদয়স্য উত্তমাৎ নিধানাৎ → যৎ উত্তমম্ অস্ति তৎ + হৃদয়স্য পূর্ণত্বাৎ তস্য মুখং বদতি।

N. Romans 7:19 যতো যামুত্তমাং ক্রিয়াং কর্তুমহং রাজ্জামি তাং ন কৰোমি কিন্তু যৎ কুৎসিতং কর্ম্ম কর্তুম্ অনিচ্ছুকোহস্মি তদের কৰোমি [G2556 kakos ■] [G2570 kalos ■] [G2556 kakos ■] [G18 agathos ■] (20) অতএব যদ্যৎ কর্ম্ম কর্তুং মমেচ্ছা ন ভরতি তদ্ যদি কৰোমি তর্হি তৎ ময়া ন ক্রিয়তে, মমান্তরর্তিনা পাপেনৈব ক্রিয়তে (21) ভদ্রং কর্তুম্ ইচ্ছুকং মাং যো হভদ্রং কর্তুং প্ররর্তয়তি তাদৃশং স্বভারমেকং মযি পশ্যামি

যত্ শোভনং কর্তুমিচ্ছামি তন্ন কৰোমি + যদা শুভং কর্তুমিচ্ছামি তদা পাপং মম সন্নিহিতং ভবতি।

(মম স্বকীয়া: বিচারা: — গমনং সর্বদা সুগমং ন ভবতি, যদপি কশ্চন সত্যরূপেণ সত্কর্তুম্ ইচ্ছতি। পৌল: স্বস্মিন্বেব এতং সংঘর্ষং নির্দিশতি। গমনং তং সংঘর্ষং ন অপহ্নুতে; তৎ তস্য সত্বেঃপি সততং সৎ এব বৃণোতি।)

O. Proverbs 1:33 ↗ read this in your Bible

য: শৃণোতি = সুরক্ষিতং নিবসতি + অনিষ্টভয়াৎ নিশ্চিন্ত:।

(মম স্বকীয়া: বিচারা: — ইয়ং সা প্রতিজ্ঞা অস্ति যা এতেন পথা গমনং কুর্বদ্ব্য: কস্মৈচিত্ জনায় দত্তা: স্থিরং, সুরক্ষিতং, তস্মাৎ এব ভয়াৎ শান্তং চ জীবনম্, যত্ ভয়ং প্রথমম্ উদ্যানে মানবহৃদয়ে প্রবিষ্টম্।)

III. ধাবনস্পর্ধা — ইশ্বরস্য সেনায়াং যোদ্ধেব সমর্পয়ত

(মম বৈয়ক্তিকবিচারা: — ইদানীং গমনং যুদ্ধং ভবতি, তথা চ দুঃখতা ন কেবলং একস্য হৃদয়স্য অন্ত: বিকল্য: অস্ति; তস্য বিরুদ্ধম্ ইচ্ছা নাম চ বর্ততি — স: দুঃখ:। যোদ্ধা বিচারেণ ন যুধ্যতি; স: শত্রুণা যুধ্যতি। স্বস্য সম্পূর্ণম্ আত্মানম্ ইশ্বরায় সমর্পয়, শুভং চ শাস্ত্রং ভবতু।)

A. Romans 6:13 অপবং স্বং স্বম্ অঙ্গম্ অধর্ম্মস্যাঙ্গং কৃৎরা পাপসেৱায়াং ন সমর্পয়ত, কিন্তু শ্মশানাদ্ উত্তিতানিৱ স্বান্ ঈশ্বরে সমর্পয়ত স্বান্জানি চ ধর্ম্মান্ত্রস্বরূপাণীশ্বরম্ উদ্দিশ্য সমর্পয়ত [G3936 paristemi ■]

স্বয়ং ইশ্বরায় সমর্পয়ত + যুস্মাকম্ অঙ্গানি ধর্ম্মস্য সাধনানি ইশ্বরায় সমর্পয়ত।

B. Matthew 6:13 অস্মান্ পরীক্ষাং মানয়, কিন্তু পাপাত্মনো বক্ষ; রাজৎরং গৌবরং পৰাক্রমঃ এতে সর্বের সর্বদা তর; তথাস্ত [G4190 poneros ■] [G4506 rhuomai ■]

অস্মান্ পরীক্ষাং মা নয় → অস্মান্ দুষ্টাত্ উদ্ধর।

C. John 17:15 ৳রং জগতন্তান্ গৃহাণেতি ন প্রার্থয়ে কিন্তুশুভাদ্ বক্ষতি প্রার্থয়েহম্ [G4190 poneros ■]

ন জগতৌ বহি: → তান্ পাপাত্ রক্ষতু।

D. 1 John 5:19 ৳রম্ ঈশ্বরাৎ জাতাঃ কিন্তু কৃৎসঃ সংসাৰঃ পাপাত্মনো ৳রং গতো হন্তীতি জানীমঃ [G4190 poneros ■]

বয়ঃ ইশ্বরাৎ স্মঃ + সম্পূর্ণ জগৎ দৃষ্টতায়্য শান্ত।

E. Matthew 13:19 মার্গপার্শ্বে বীজানুপ্তানি তস্যার্থঃ এষঃ, যদা কশ্চিৎ রাজ্যস্য কথাং নিশম্য ন বুধ্যতে, তদা পাপাত্মাগত্য তদীয়মনস উপ্তাং কথাং হবন্ নযতি **[G4190 poneros ■] [G2570 kalos ■] [G4190 poneros ■]** (20) অপৰং পাষণস্থলে বীজানুপ্তানি তস্যার্থঃ এষঃ; কশ্চিৎ কথাং শ্রুৎৱৈৰ হৰ্ষচিন্তেন গৃহ্নাতি (21) কিন্তু তস্য মনসি মূল্যপ্রতিষ্টেৱাৎ স কিঞ্চিৎকালমাত্রং স্থিৰস্তিষ্ঠতি; পশ্চাত তৎকথাকাৰণাৎ কোপি ক্লেস্তাডনা রা চেৎ জাযতে, তৰ্হি স তৎক্ষণাদ্ৱিহ্নমেতি (22) অপৰং কণ্টকানাং মধ্যে বীজানুপ্তানি তদর্থঃ এষঃ; কেনচিৎ কথায়াং শ্রুতায়্য সাংসারিকচিন্তাভি ব্রান্তিভিষ্চ সা গ্রস্যতে, তেন সা মা বিফলা ভৱতি (23) অপৰম্ উৰ্বৰায়াং বীজানুপ্তানি তদর্থঃ এষঃ; যে তাং কথাং শ্রুৎৱা রুধ্যন্তে, তে ফলিতাঃ সন্তঃ কেচিৎ শতগুণানি কেচিৎ ষষ্টিগুণানি কেচিচ্ ত্রিংশদগুণানি ফলানি জনযন্তি (24) অনন্তৰং সোপৰামেকাং দৃষ্টান্তকথামুপস্থাপ্য তেভ্যঃ কথ্যামাস; স্বর্গীয়ৰাজ্যং তাদৃশেন কেনচিদ্ গৃহস্থেনোপমীয়তে, যেন স্বীয়ক্ষেত্রে প্রশস্তবীজান্যোপ্যন্ত (25) কিন্তু ক্ষণদায়াং সকললোকেষু সুপ্তেষু তস্য বিপুৰাগত্য তেষাং গোধূমবীজানাং মধ্যে রন্যযরমবীজানুপ্তা ব্রজাজ (26) ততো যদা বীজেভ্যোহক্ষৰা জাযমানাঃ কণিশানি ঘূতৱন্তঃ; তদা রন্যযরসান্যপি দৃশ্যমানান্যভৱন্ (27) ততো গৃহস্থস্য দাসেযা আগম্য তস্মৈ কথ্যাক্ষত্ৰুঃ, হে মহেচ্ছ, ভৱতা কিং ক্ষেত্রে ভদ্রবীজানি নোপ্যন্ত? তথাৎৱে রন্যযরসানি কৃত আযন্? (28) তদানীং তেন তে প্রতিগদিতাঃ, কেনচিৎ বিপুণা কৰ্মদমকাৰি (29) তেনাৱাদি, নহি, শক্ষেহং রন্যযরসোৎপাটনকালে যুস্মাভিস্তেঃ সাকং গোধূমা অপ্যুৎপাটিষ্যন্তে (30) অতঃ শস্যকৰ্ত্তনকালং যাবদ্ উভযান্যপি সহ রদ্ধন্তাং, পশ্চাৎ কৰ্ত্তনকালে কৰ্ত্তকান্ৱক্ষ্যামি, যুযমাদৌ রন্যযরসানি সংগৃহ্য দাহয়িতুং বীটিকা বদ্ধা স্থাপয়ত; কিন্তু সৰেৰ্বে গোধূমা যুস্মাভি ভাণ্ডাগাৰং নীৎৱা স্থাপ্যন্তাম্ (31) অনন্তৰং সোপৰামেকাং দৃষ্টান্তকথামুপস্থাপ্য তেভ্যঃ কথিতৱান্ কশ্চিন্মনুজঃ সৰ্ষপবীজমেকং নীৎৱা স্বক্ষেত্রে উৰাপ (32) সৰ্ষপবীজং সৰৱস্মাদ্ বীজাৎ ক্ষুদ্রমপি সদক্ষুৰিতং সৰৱস্মাৎ শাকাৎ বৃহদ্ ভৱতি; স তাদৃশস্তৰু ভৱতি, যস্য শাখাসু নভসঃ খগা আগত্য নিৱসন্তি; স্বর্গীয়ৰাজ্যং তাদৃশস্য সৰ্ষপৈকস্য সমম্ (33) পুনৰপি স উপমাকথামেকাং তেভ্যঃ কথ্যাক্ষকৰা; কাচন যোষিৎ যৎ কিঞ্চিদাদ্য দ্রোণত্ৰয়মিতগোধূমচূর্ণানাং মধ্যে সৰেৰ্ষাৎ মিশ্রীভৱনপৰ্য্যন্তং সমাচ্ছাদ্য নিধন্তৱতী, তৎকিঞ্চিমিৱ স্বর্গৰাজ্যং (34) ইথং যীশু মনুজনিৱহানাং সন্নিধাৱুপমাকথাভিৰেতান্যাত্মানানি কথিতৱান্ উপমাং বিনা তেভ্যঃ কিমপি কথাং নাকথ্যৎ (35) এতেন দৃষ্টান্তীয়েন ৱাক্যেন ৱাদ্য রদনং নিজং অহং প্রকাশয়িষ্যামি গুপ্তৱাক্যং পুৰাভৱং যদেতদ্বচনং ভৱিষ্যদ্বাদিনা প্রোক্তমাসীৎ, তৎ সিদ্ধমভৱৎ (36) সৰৱান্ মনুজান্ৱিসৃজ্য যীশৌ গৃহং প্ৰৱিষ্টে তচ্ছিষ্য আগত্য যীশৱে কথিতৱন্তঃ, ক্ষেত্ৰস্য রন্যযরসীযদৃষ্টান্তকথাম্ ভৱান অস্মান্ স্পষ্টীকৃত্য ৱদতু (37) ততঃ স প্রতুৱাচ, যেন ভদ্রবীজানুপ্যন্তে স মনুজপুত্ৰঃ (38) ক্ষেত্ৰং জগৎ, ভদ্রবীজানী রাজ্যস্য সন্তানাঃ

ততঃ দৃষ্টঃ আগচ্ছতি → শুভং বীজম্ = রাজ্যস্য পুত্ৰাঃ + নিষ্ফলানি বীজানি = দৃষ্টস্য পুত্ৰাঃ।

(মম ব্যক্তিগতাঃ বিচাৰাঃ — অস্মিন্ যুদ্ধে শত্রোঃ নাম রণনীতিশ্চ বিদ্যেতৈঃ সঃ দৃষ্টঃ, পোনেৱোস্ (G4190, দৃষ্টঃ, যত্র ইচ্ছাশক্তিঃ অন্তর্নিহিতা অস্তি)। সঃ কেৱলং পৰীক্ষাং ন কৰোতি; অপিচ সঃ অপহৱতি, তথা চ তস্মিন্ এব ধ্বংসে কৃত্রিমবীজানি ৱোপয়তি যত্র সদ্ধীজং বৰ্ধতি। এতস্যাঃ স্পৰ্ধায়াঃ ধাৱনস্য অর্থঃ অয়ং যত্ স্বকীয়াত্ হৃদযাত্ অধিকং বিষয়ে জাগৰুকেণ স্খাতব্যম্।)

F. Matthew 6:22 লোচনং দেহস্য প্রদীপকং, তস্মাৎ যদি তৱ লোচনং প্রসন্নং ভৱতি, তৰ্হি তৱ কৃৎসং রপু দীপ্তিযুক্তং ভৱিষ্যতি **[G4190 poneros ■] [G573 haplous ■]** (23) কিন্তু লোচনেহপ্রসন্নে তৱ কৃৎসং রপুঃ তমিষ্যযুক্তং ভৱিষ্যতি অতএৱ যা দীপ্তিস্থিৱি ৱিৱদ্যতে, সা যদি তমিষ্যযুক্তা ভৱতি, তৰ্হি তৎ তমিষ্যং কিযন্ মহৎ

তৱ নেত্রং একাং → তৱ সম্পূর্ণ শরীরং জ্যোতিষা পূর্ণম্ + তৱ নেত্রং দৃষ্টং → অন্ধকাৱেণ পূর্ণম্।

G. Matthew 12:35 তেন সাধুৰ্মানৱোহন্তঃকৰণৰূপাৎ সাধুভাণ্ডাগাৰাৎ সাধু দ্ৰৱ্যং নিৰ্গমযতি, অসাধুৰ্মানুষস্তসাধুভাণ্ডাগাৰাদ্ অসাধুৱস্তুনি নিৰ্গমযতি **[G4190 poneros ■] [G2344 thesauros ■] [G18 agathos ■]**

সজ্জনঃ শুভনিধিঃ → শুভানি বস্তুনি + দুৰ্জনঃ দুহনিধিঃ → দুহানি বস্তুনি।

H. Ephesians 6:16 যেন চ দুষ্টাৱনোহগ্নিবাণান্ সৰৱান্ নিৱৰ্ণাপয়িতুং শক্ষ্যে তাদৃশং সৰৱাচ্ছাদকং ফলকং ব্ৰিহাসং ধাৰযত

[G4190 poneros ■]

শ্রদ্ধাফলকম্ → দৃষ্টস্য সৰ্বাণি অগ্নিবাণানি নিৱৰ্ণয়ত।

I. 1 John 2:14 হে পিতৰঃ, আদিতো যো ৱৰ্ত্তমানন্তং যুযং জানীথ তস্মাদ্ যুস্মান্ প্রতি লিখিতৱান্ হে যুৱানঃ, যুযং বলৱন্ত আধেব, ঈশ্বৰস্য ৱাক্যঞ্চ যুস্মদন্তৰে ৱৰ্ততে পাপাত্মা চ যুস্মাভিঃ পৰাজিগ্যে তস্মাদ্ যুস্মান্ প্রতি লিখিতৱান্ **[G4190 poneros ■] [G3528 nikao ■]**

যুয়ং বলবন্তঃ স্থ + ঈশ্বৰস্য ৱাক্যং যুস্মাসু তিষ্ঠতি → যুয়ং দৃষ্ট জিতবন্তঃ।

(মম ব্যক্তিগতাঃ বিচাৰাঃ — ঠালঃ বচনং চ দ্বাৰ্ভ্যাং পার্শ্বাৰ্ভ্যাং সমানং কৰ্ম কুরুতঃ। ঠালঃ ত্বয়ি প্রদ্বিপ্তং বস্তু নিৱাৱয়তি, ত্বয়ি নিবসত্ বচনং তু মনুষ্যং তাং ঠালং ধাৱয়িতুং সমর্থ কৰোতি। অস্মিন্ যুদ্ধে দ্বয়োঃ অপি কশ্চন ঐচ্ছিকঃ নাস্তি।)

J. Acts 10:38 ফলত ঈশ্বৰেণ পৱিত্ৰেণাত্মনা শক্ত্যা চাভিষিক্তো নাসৰতীয়যীশুঃ স্থানে স্থানে ভ্রমন্ সুক্ৰিয়াং কুৱৰ্বন্ শৈতানা ক্লিষ্টান্ সৰৱলোকান্ স্বস্থান অকৰোৎ, যত ঈশ্বৰন্তস্য সহায় আসীৎ; **[G3586 xylon ■] [G1228 diabolos ■] [G2616 katadynasteuo ■] [G2390 iaomai ■] [G2109 euergeteo ■]** (39) ৱযঞ্চ যিহুদীয়দেশে যিৰুশালমগৰে চ তেন কৃতানাং সৰেৰ্ষাং কৰ্ম্মণাং সাক্ষিণো ভৱামঃ

সঃ সৰৱত্ৰ হিতং কুৱন্ পিষাচে ন পীড়িতান্ সৰৱান্ স্বস্থান্ অকরোত্ → যং তে অগ্নন্ বৃক্ষে চ অলম্বয়ন্।

K. Luke 23:41 যোগ্যপাত্ৰে আৱাং স্বস্বকৰ্ম্মণাং সমুচিতফলং প্রাপুৱঃ কিন্তুনেন কিমপি নাপৰাধং **[G824 atopos ■]**

বয়ং তু ন্যায়েন + অয়ং মনুষ্যঃ কিমপি অনুচিতং ন কৃতৱান্।

L. 1 Peter 2:23 নিন্দিতো হপি সন্ স্ প্রতিনিন্দাং ন কৃতৱান্ দুঃখং সহমানো হপি ন ভৰ্তসিতৱান্ কিন্তু যথাথৱিচাৰযিতুঃ সমীপে স্বং সমৰ্পিতৱান্

यदा सः निन्देतः अभवत्, तदा पुनः न प्रत्यानेन्दत् → यथार्थं विचारयत तस्मै आत्मानं समापेतवान्।

(मम स्वकीयाः विचाराः — यदा संघर्षः वैयक्तिकः भवति तदा स्पर्धायां धावनं एतादृशं दृश्यते: दुर्बलताजन्यं मौनं न, अपि तु सम्यक् न्यायं कुर्वते तस्मै सम्पूर्णविषयस्य सुविचारितं समर्पणम्। एतत् सैनिकत्वम्, न आत्मसमर्पणम्।)

M. Matthew 5:44 किञ्च ह्यं युष्मान् रदामि, युयं बिपुर्बपि प्रेम कुरुत, ये च युष्मान् शपन्ते, तान्, आशिषं रदत, ये च युष्मान् ऋतीयन्ते, तेषां मञ्जलं कुरुत, ये च युष्मान् निन्दन्ति, ताडयन्ति च, तेषां कृते प्रार्थयस्व [G18 agathos ■] [G4190 poneros ■] [G2570 kalos ■] (45) तत्र यः सतामसतापेणोपि प्रभाकरम् उदाययति, तथा धार्मिकानामधार्मिकानां पुरोहितानां निरर्थकं ररयति तदृशो यो युष्माकं स्वर्गस्थः पिता, युयं तस्यैव सन्तानां भविष्यथ

स्वशत्रून् प्रेम कुरु + यैः त्वं द्विषसे तेभ्यः सत्कर्म कुरु → सः स्वसूर्यम् दुष्टेषु सत्यु च उदयं करोति।

N. 1 Peter 3:9 अनिष्टस्य परिशोधनानिष्ठं निन्दायां वा परिशोधनं निन्दां न कुर्यात् आशिषं दत्तं यतो युयम् आशिर्वादिषु भविष्यति इति जानीथ [G2556 kakos ■] [G18 agathos ■] [G2556 kakos ■] (10) अपरधर्म, जीवने प्रीयमाणो यः सुदिनानि दिदृक्ते पापां जिह्वां मृषाराकायां स्वाधर्मे स निरर्थाय

दुष्टस्य स्थाने दुष्टम् अप्रतिददत् → प्रत्युत आशीर्वादं ददत् → जीवनं प्रीणातु शुभदिनानि च पश्यतु।

O. Genesis 50:20 ↗ read this in your Bible

यूयं मां प्रति अनिष्टम् अचिन्तयत + ईश्वरः तत् मङ्गलार्थम् अचिन्तयत् → बहुजनान् जीवतः रक्षितुम्।

(मम व्यक्तिगताः विचाराः — chashab (H2803, चिन्तनम्, कल्पनम्) इति शब्दः अस्य श्लोकस्य उभयपक्षयोः अपि एकः एव वर्तते: यत् तैः कल्पितम् आसीत्, तदेव ईश्वरेणापि कल्पितम् आसीत्। एतां स्पर्धां सम्यक् धावनस्य अर्थः नास्ति यत् दुष्टता कदापि तव प्रति न प्रक्षिप्यते। अपितु तस्यार्थः अस्ति यत् तस्मिन्नेव ईश्वरे विश्वासः स्थापनीयः, यः योसेफस्य भ्रातॄणां कर्म कर्तुम् अनुमन्यत, सः तामेव दुष्टतां परिवर्त्य बहूनां जीवितानां रक्षणाय उपयोक्तुं शक्नोति।)

P. Romans 8:28 अपरम् ईश्वरीयनिरूपणानुसारेणोद्भूताः सन्तो ये तस्मिन् प्रीयन्ते सर्वानि मिलित्वा तेषां मञ्जलं साधयन्ति, एतद् रयं जानीमः [G18 agathos ■]

ईश्वरं प्रेम्णा भजतां जनानां हिताय सर्वाणि वस्तूनि सहकार्यं कुर्वन्ति।

Q. Romans 12:21 कुक्रियया पराजिता न सन्त उन्मत्क्रियया कुक्रियां पराजयत [G18 agathos ■] [G3528 nikao ■]

[G2556 kakos ■] [G3528 nikao ■]

दुष्टेन मा पराजीयस्व → शुभेन दुष्टं पराजय।

(मम स्वकीयाः विचाराः — इयमेव सा एका आज्ञा या सम्पूर्णा स्पर्धा संग्रहति: न केवलं दुष्टत्वस्य सहनं किन्तु तस्य पराजयः, आयुधं च यत् नामितं तत् साधुत्वम् अस्ति। निकाओ (G3528, विजयः) योद्धृशब्दः अस्ति — जेतुं, क्षेत्रं विजेतुं। अस्मिन् युद्धे साधुत्वं निष्क्रियं न भवति। तत् आक्रमति।)

IV. अन्तिमरेखा — सत् च असत् च, वचनं च, सर्वदा तिष्ठति

(मम स्वकीयाः विचाराः — प्रत्येका स्पर्धा अन्ते गच्छति, इयं च न समाधौ समाप्यते, न वा केवलं न्याये। इयं वृक्षे समाप्यते, यः उद्घाटितः तिष्ठति, तथा प्रतिज्ञायां या न क्षीयते। यो विजयी भवति सः तस्मात् भुङ्क्ते।)

A. 1 John 3:8 यः पापाचापं करोति स शयतानां जातो यतः शयतान आदितः पापाचापी शयतानस्य कर्मणां लोपार्थमेवेश्वरस्य पुत्रः प्राकाशत [G1228 diabolos ■] [G3089 luo ■]

ईश्वरस्य पुत्रः प्रकटितः अभवत् → यत् शयतानस्य कर्माणि विनाशयेत्।

B. 2 Timothy 3:12 परबन्तु यारन्तो लोकाः ख्रीष्टेन वीर्यशुभेभ्यो आचरितुम् इच्छन्ति तेषां सर्वेषाम् उपद्रवो भविष्यति सर्वे ये ख्रीष्टीयौ धार्मिकतया जीवितुम् इच्छन्ति → ते उपद्रवं सहिष्यन्ते।

(मम स्वकीयाः विचाराः — अन्तिमरेखा स्पर्धा सुलभा आसीत् इति न कल्पयति। अद्यापि दुष्टताक्षमे जगति सत्कर्मकरणं सत्यं मूल्यं आनयति। इदं वचनं अत्र तिष्ठति यतः समाप्तिः कदापि एवं न पठ्यते यत् संग्रामेण किमपि मूल्यं न दत्तम् इति।)

C. 1 Peter 2:24 रयं यं पापेभ्यो निवृत्त्य धर्मार्थं जीरामस्तुदर्थं स स्वशीर्षेणास्माकं पापानि क्रूरं उद्गच्छन् तस्य प्रहारे रूयं स्वस्थः अभवत् [G3586 xylon ■] [G399 anaphero ■]

सः वृक्षे स्वशरीरेण अस्मदीयानि पापानि उवहत् → पापेभ्यः मृतः, धर्माय जीवन्।

D. Revelation 2:10 रयं यो यः क्रेशः सोदर्यस्तुमां मा भैषीः पश्य शयतानो युष्माकं परीक्षार्थं कांश्चिद् कारायां निष्कस्यति दश दिनानि यारं क्रेशो युष्मासु रतिष्यते च रं मृत्युपर्यन्तं विश्वासो भव तनाहं जीरनकिरीटं तुभ्यं दास्यामि [G4735 stephanos ■] त्वं मृत्युपर्यन्तं विश्वासी भव → अहं तुभ्यं जीवनमुक्तं दास्यामि।

E. Psalm 119:160 ↗ read this in your Bible

तव वचनम् आरम्भात् सत्यम् → तव धर्मयानां विधानानां प्रत्येकं सर्वदा तिष्ठति।

(मम व्यक्तिगताः विचाराः — शुभम् अशुभं च ग्रन्थस्य आरम्भे एव नामकरणं प्राप्तवन्तौ, अयं च श्लोकः कथयति यत् ययोः नामकरणं कृतवत् तत् वचनम् आरम्भात् एव सत्यम् अस्ति, तस्य च निर्णयः कदापि न म्लायन्ति। उत्पत्तिग्रन्थस्य प्रथमाध्याये ईश्वरेण यत् शुभम् इत्युक्तं, तत् सः अद्यापि शुभम् इति वदति।)

F. Revelation 2:7 यस्य श्रोत्रं रिदयते स समितीः प्रतुच्यमानाम् आत्मनः कथां शृणोतु यो जनो जयति तस्मा अहम्
संश्रवस्यारामस्तुजीवनतरोः फलं भोक्तुं दास्यामि [G3857 paradeisos ■] [G2222 zoe ■] [G3586 xylon ■]
[G5315 phago ■] [G3528 nikao ■]
यः जयति तस्मै → ईश्वरस्य परमोद्यानस्य मध्ये स्थितस्य जीवनवृक्षस्य भोजनाय।

G. Revelation 21:4 तेषां नेत्रेभ्यश्चाश्रुणि सर्वाणीश्वरेण प्रमार्क्ष्यन्ते मृत्युरपि पुन न भविष्यति शोकरिलापक्लेशा अपि पुन न भविष्यति,
यतः प्रथमानि सर्वाणि रयतीतिनि [G2288 thanatos ■]
न पुनः मृत्युः, न च शोकः → पूर्वाणि तानि व्यतीतानि।

H. Revelation 21:7 यो जयति स सर्वेषाम् अधिकारी भविष्यति, अहम् तस्येश्वरो भविष्यामि।
[G3528 nikao ■]
यः जयति सः सर्वाणि अधिकारिष्यते + अहं तस्य ईश्वरो भविष्यामि।

I. Revelation 22:1 अनन्तरं स स्फटिकरं निर्मलम् अमृतोद्यस्य श्रोतो माम् अदर्शयत् तद् ईश्वरस्य मेघशारकस्य च सिंहासनात् निर्गच्छति
[G2652 katanathema ■] [G1484 ethnos ■] [G2322 therapeia ■] [G3586 xylon ■] [G2222 zoe ■]
[G4215 potamos ■] (2) नगर्या मार्गमध्ये तस्या नद्याः पार्श्वयोर्भूतवृक्षा रिदयन्ते तेषां द्वादशफलानि भवन्ति, एकैको वृक्षः प्रतिमासं
स्वफलं फलति तद्वृक्षपत्राणि चान्यजातीयानाम् आरोग्यजनकानि (3) अपरं किमपि शापग्रस्तं पुन न भविष्यति तस्या मध्य ईश्वरस्य मेघशारकस्य च
सिंहासनं स्थास्यति तस्य दासाश्च तं सेरिष्यन्ते

जीवनजलस्य पवित्रा नदी + जीवनवृक्षः, जातीनाम् आरोग्यार्थं पत्राणि → पुनः शापो न भविष्यति।

(मम स्वकीयाः विचाराः — उत्पत्तिग्रन्थे एकस्मिन् वृक्षे यत् पिहितम् आसीत्, तत् अत्र अन्यस्मिन् वृक्षे विवृतम् अस्ति, भेदः च सम्पूर्णः अस्तिः पुनः शापः न
विद्यते। अस्य सम्पूर्णध्ययनस्य समाप्तिबिन्दुः न तत् स्थानम् अस्ति यत्र दुष्टता केवलं नियन्त्रिता भवति। तत् स्थानम् अस्ति यत्र दुष्टता अन्ततः सम्पूर्णतया
अपगता भवति।)

J. Revelation 22:14 अमृतवृक्षस्याधिकारप्राप्त्यर्थं द्वारं नगरप्रवेशार्थं ये तस्याङ्गाः पालयन्ति त एव धन्याः [G3586 xylon ■]
धन्याः ते ये तस्य आज्ञाः पालयन्ति → जीवनवृक्षे अधिकारः + द्वारैः नगरं प्रविशन्ति।

K. Psalm 23:6 ✎ read this in your Bible
सौजन्यं कृपा च मां अनुगमिष्यतः → अहं परमेश्वरस्य गृहे सर्वदा निवत्स्यामि।

L. James 1:17 यं किञ्चिद् उन्नतं दानं पूर्णो रत्नश्च तं सर्वम् उद्भादयति अर्थात् यस्मिन् दशान्तरं परिवर्तनजातच्छाया वा नास्ति तस्माद् दीप्त्याकबां
पितृवररोहति [G18 agathos ■]

प्रत्येकं शुभं दानं प्रत्येकं च सिद्धं दानम् = उपरिष्ठात्, ज्योतिषां पितुः सकाशात्।

(मम स्वकीयाः विचाराः — सम्पूर्णा गतिः ईश्वरस्य स्वकीयेन शुभेन आरब्धा — सः अपश्यत् यत् तत् शुभम् आसीत् — तथैव च समाप्यतेः सर्वं शुभं दानं
तस्मात्, ज्योतिषां पितुः, अपरिवर्तनीयस्य अवतरति। शुभं तस्य आदितः आसीत्, अन्तरहितं च तस्यैव अस्ति।)

द्वयोर्मुखम् — दुष्टं द्वेष, शिष्टं प्रीय

Psalm 97:10 ✎ read this in your Bible
हे परमेश्वरस्य प्रेमिणः, दुष्टं द्वेषत → स स्वपवित्रजनानाम् आत्मानः रक्षति।

Romans 12:9 अपरं युष्माकं प्रेम कापट्यरजितं भ्रष्टं यद् अभिद्रं तद् स्वाधीयध्वं यच्च भद्रं तस्मिन् अनुब्रज्यध्वम् [G18 agathos ■]
[G2853 kollao ■] [G4190 ponerōs ■] [G655 apostygeo ■] [G505 anypokritos ■] [G26 agape ■]
यद् दुष्टं तद् द्वेष + यत् साधु तस्मिन् सज्जध्वम्।

2 Corinthians 13:1 एतद्भूतीयरात्रौ अहं युष्माकं समीपं गच्छामि तेन सर्वा कथा द्वयोस्त्यागाणां वा साक्षिणां मुखेन निश्चयते
[G3144 martus ■]

द्वयोः त्रयाणां वा साक्षिणां वदने प्रतिवचनं सर्वं स्थापितं भविष्यति।

(मम स्वकीयाः विचाराः — एकं स्तोत्रं च एकं पत्रं च, एकः पुरातनः नियमः च एकः नवः नियमः च, तयोः मध्ये च एकः स्वरः यद् दुष्टं तद् द्वेष, यत् सत् तद् हर्षं
धारय। द्वयोः त्रयोः वा साक्षिणां मुखे इदं वचनं निःसंशयं स्थापितं भवति।)

छाया च पूर्तिश्च

Shadow Deuteronomy 21:22 ✎ read this in your Bible

यः वृक्षे लम्बते सः ईश्वरस्य शापः।

Fulfillment Galatians 3:13 ख्रीष्टोहस्मान् परित्रयीय रारुस्त्रायाः शापां मोचितवान् यतोहस्माकं रिनिमयेन स स्वयं शापास्पदमभरत् तदधि
लिखितमास्ते, यथा, "यः कश्चिं तबारुह्यते सोहभिषिक्त इति [G3586 xylon ■] [G2671 katara ■]

ख्रीष्टः अस्मान् उद्धृतवान् → अस्मदर्थं शापः कृतः → यः कश्चित् वृक्षे लम्बते सः शापः।

(मम व्याक्तेगतावेचाराः — व्यवस्था वृक्षं शापस्य स्थानम् इति अकथयत्। ख्रीष्टः तं वृक्षं न पारेवाजैतवान्; सः तास्मिन् वृक्षे लाम्बेतः अभवत्, स्वयमेव च शापः अभवत्, यथा शापः तत्रैव समाप्तः भवेत्, न तु अधिकं प्रसरेत्। यः वृक्षः पुरा केवलं न्यायम् एव द्योतयति स्म, सः तस्मिन् जीवनवृक्षस्य द्वारम् अभवत्।)

समापनम्

1 John 2:17 सञ्सारबन्तृतीयाभिलाषश्च रात्येति किञ्च य ईश्वरसोष्टेः कबोति सो हनन्तकालं यारं तिष्ठति

संसारः अपगच्छति → यः परमेश्वरस्य इच्छां करोति सः सर्वदा तिष्ठति।

Romans 16:20 अधिकञ्च शाब्दिनायक ईश्वरः शैतानम् अद्विलम्बं युष्माकं पदानाम् अक्षे मर्दिष्यति अस्माकं प्रभु यीशुख्रीष्टो य्मासु प्रसादं क्रियां इति

शान्तिदाता ईश्वरः शीघ्रं शैतानं युष्मत्पादानाम् अधः चूर्णीकरिष्यति → अस्मत्प्रभोः यीशुख्रीष्टस्य अनुग्रहः युष्मासु भवतु।

(मम स्वकीयाः विचाराः — सम्पूर्णं चरणं एकस्यां पङ्क्तौ सङ्गृहीतम् अस्तु। तत् अधः आरब्धम्: ईश्वरस्य स्वकीयं शुभं, सृष्टेः उपरि उक्तं यदा दुष्टत्वस्य नाम अपि न आसीत् तदा पूर्वम्, तथा हृदयं यत् ज्ञातुं, प्रष्टुं, वरितुं च अपेक्षितम् आसीत्। तत् दैनिकचर्यायां वर्धितम्: दुष्टात् अपसर, शुभं कुरु, तत्र च निरन्तरं तिष्ठ, सामान्यस्थानेषु, दिने दिने। तत् धावनं युद्धं च अभवत्: प्रतिरोद्धव्यः सत्यः दुष्टः, उत्थापनीया ढाल्, तथा अतिकठिनतरा आज्ञा यत् दुष्टस्य प्रत्युत्तरं शुभेन दातव्यं न तु अधिकदुष्टत्वेन। अन्ते च तत् तत्रैव समाप्यते यत्र प्रत्येकं सर्पणं प्रत्येकं गमनं प्रत्येकं धावनं च सर्वदा गन्तव्यम् आसीत् — वृक्षे, उद्घाटिते तिष्ठति, न पुनः शापे, प्रत्येकाय विजेतु। जगत् तस्य च दुष्टत्वं अतिक्रामति। यत् ईश्वरेच्छाकरणे स्थापितम् अस्ति तत् तेन सह न अतिक्रामति।)

अभ्यासप्रश्नावली

1. उत्पत्तिः १:३१ — अपि च ईश्वरः स्वेन कृतं सर्वं वस्तु अपश्यत्, पश्य च, तत् आसीत्:

- शुभं दुष्टं च सह
- अतिशयेन उत्तमम्
- केवलं सर्वदा दुष्टमेव

2. गीतसंहिता 34:8 — आस्वादयत पश्यत च यत् प्रभुः अस्ति:

- दयालुः
- शुभम्
- विश्वस्त

3. प्रथमराजग्रन्थः ३:९ — तस्मात् त्वं स्वदासाय प्रजाविचारार्थं विवेकयुक्तं हृदयं देहि, यतः अहं भेदं कर्तुं शक्नुयाम् इदानीं —

- हृदयस्य विचाराः
- शुभं च अशुभं च
- पितृहीनान् विधवाश्च

4. रोमन् 12:21 — दुष्टेन पराजितः न भव, अपि तु:

- दुष्टस्य स्थाने दुष्टं न प्रतिददातु
- शुभेन दुष्टं जयेत्
- यत् दुष्टं तस्मात् घृणां कुर्यात्

5. उत्पत्तिः ५०:२० — यूयं मां प्रति अनिष्टं चिन्तितवन्तः; परन्तु ईश्वरः तत् शुभार्थं मेने, यथा अद्य दृश्यते तथा साधयितुं, यतः

- दुष्कर्मस्य कृते दुष्कर्मण प्रतिफलम्
- तान् दुष्टानां हस्तात् मोचयेत्
- बहुजनान् जीवतः रक्षितुम्

6. १ यूहन्ना २:१४ — अहं युष्मान् प्रति लिखितवान्, हे युवानः, यतो यूयं बलवन्तः स्थ, ईश्वरस्य वचनं च युष्मासु तिष्ठति, तथा च यूयम्:

- आदितो यः सः तं ज्ञातवन्तः
- दुष्टं जयेत्
- पवित्रम् आत्मानं प्राप्तवान्

7. प्रकाशितवाक्यम् 21:7 — यो जयति स सर्वाणि अधिकारिष्यति; अहं च तस्य ईश्वरो भविष्यामि, तथा:

- स मम पुत्रो भविष्यति
- अहं तस्य नेत्राभ्यां सर्वाणि अश्रूणि अपमाक्ष्यामि
- स युगयुगान्तं राज्यं करिष्यति

उत्तरकुञ्जिकाः 1-b, 2-b, 3-b, 4-b, 5-c, 6-b, 7-a

एतत् अध्ययनं कथं शाखते

छाया कथं प्रकाशं आनयति: व्यवस्थायां शप्त इति नामितो वृक्षः (DEUTERONOMY 21:22-23) स एव वृक्षजातिः यस्मिन् ख्रीष्टः लम्बितः, अस्माकं कृते शापो भूत्वा (GALATIANS 3:13) — तस्य च पारभागे जीवनवृक्षः उद्घाटितस्तिष्ठति (REVELATION 22:2)।

नूतनः नियमः एतत् कथं विवृणोति: सर्वप्रथमवृक्षे यत् आज्ञप्तम् आसीत् — सर्वस्मात् वृक्षात् स्वच्छन्दं भक्षयताम्, एकं विहाय — तत् अन्त्ये वृक्षे मुक्तं निमन्त्रणं भवति: यः जयति तस्मै जीवनवृक्षस्य फलं भोक्तुं दास्यामि इति (उत्पत्तिः २:१६-१७ → प्रकाशितवाक्यम् २:७)।

शब्दाः कथं महत्त्वं धारयन्ति: AGATHOS (G18, शुभम्) तथा KALOS (G2570, शुभम्) इति स्वयं शुभं यत्, प्रदर्शने च शुभं यत्, तत् नामयतः; KAKOS (G2556, दुष्टम्) तथा PONEROS (G4190, दुष्टम्) इति निःसारं यत्, हिंसायां प्रवृत्तां इच्छां यस्य च, तत् नामयतः — कस्मिन् श्लोके कः शब्दः वर्तते, कस्मात् च कारणात्, इति चिह्नयतु।

एतद् भवतः कथं संबद्धम् अस्ति: सर्वाणि परीक्षध्वम्, यत् शुभं तत् दृढं धारयत (1 THESSALONIANS 5:21)। पापात् दूरे भवत, सत्कर्म कुरुत (PSALM 34:14)। इन्द्रियाणि अभ्यासेन शिक्षिताः भवन्ति, इच्छामात्रेण न (HEBREWS 5:14)।

अनन्तत्वाय एतस्य तात्पर्यम् इदम्: यत् एकस्मिन् वृक्षे नष्टम् अभवत्, तत् अन्यस्मिन् वृक्षे पुनः दीयते — यः विजयते तस्मै अहं जीवनवृक्षस्य फलं भोक्तुं दास्यामि (प्रकाशितवाक्यम् २:७), तथा तत्र पुनः कोऽपि शापः न भविष्यति (प्रकाशितवाक्यम् २२:३)।

प्रसङ्गान्तरः: योसेफः पुत्रस्य प्रतिरूपम् अस्ति, यः भ्रातृभिः दुष्टभावेन विक्रीतः, ईश्वरेण च जीवनरक्षणार्थं प्रेषितः (उत्पत्तिः ४५:५-८; प्रेरितकृत्यानि ७:९-१०) — तस्य विरुद्धं यत् दुष्टं चिन्तितम् आसीत्, तत् ईश्वरेण कथं शुभत्वे परिवर्तितम्, इति अन्विष्यत।

सम्भाव्यं प्रकाशनम्: CHASHAB (H2803, चिन्तनम्, योजनाकरणम्) उत्पत्तिः ५०:२० इत्यस्य उभयपक्षयोः प्रयुक्तं तदेव पदम् अस्ति — भ्रातृभिः यत् योजितम्, तत् ईश्वरेण अपि योजितम्। [श्लोकाः सङ्गृहीताः — एकोऽपि श्लोकः एतत् केवलं न वदति] एकेन इच्छया योजितं तदेव दुष्कर्म महत्तरया इच्छया अधिक्रान्तम् अभवत्, न तु उभयोः पक्षयोः अभिप्रायः अस्वीकृतः।

त्वं रक्षां प्राप्तुं किं कर्तव्यम्?

अस्माकं धर्मशास्त्राध्ययनं पश्यत — "परित्राणार्थं मया किं कर्तव्यम्?"

SOURCES & CREDITS

Scripture: Sanskrit New Testament in Assamese Script (CC BY-SA 4.0) — a redistributable edition, looked up exactly and never machine-translated. Alternate chapter/verse numbering reconciled with STEP Bible TVTMS (CC BY 4.0).

Strong's numbering & original-language data: OpenScriptures Hebrew Bible (CC BY 4.0); STEP Bible.org — TAHOT/TAGNT/TBESH/TBESG (CC BY 4.0); Robinson-Pierpont Byzantine Majority Text (Public Domain); Strong's dictionary, 1890 (Public Domain).

Typography: Google Noto fonts (SIL Open Font License 1.1).

© SEE MORE JESUS · wanttoseemore.com — shared under Creative Commons Attribution 4.0 (CC BY 4.0).